8

राजस्थानी चित्रकला
Rajasthani School of Painting

8.0 भूमिका

राजस्थानी चित्रकला का इतिहास सन् 16वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक फैला हुआ है। इस शैली का विकास जैन पुस्तक शैली से हुआ। यह शैली गुजरात, बुन्देलखण्ड और फिर राजपूताने की रियासतों तथा पंजाब, कश्मीर आदि में पुष्पित–पल्लवित हुई।

17 वीं शताब्दी में राजस्थानी शैली में अधिक चित्र बने। कलाकार साधारण जनता के आँगन से लेकर राज दरबार तक फैले हुए थे। समाज में हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति का मेल हो चुका था। अतः मुस्लिम पहनावा, दरबारी अदब–कायदे, मुस्लिम और ईरानी रंगों की पसंद और प्रचलित मुग़ल चित्रों (मिनिएचर पेंटिंग) की शैली का प्रभाव राजस्थानी चित्रों पर भी पड़ा।

राजस्थानी शैली की मुख्य चार शाखाएं थीं। राजस्थानी शैली (राजस्थान क्षेत्र), बुन्देल शैली (बुन्देलखण्ड क्षेत्र), पहाड़ी शैली (पंजाब और गढ़वाल) और सिख शैली। जयपुर, मेवाड़, नाथद्वारा, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा–बूँदी, नागोर, किशनगढ़, अलवर, शेखावारी आदि राजस्थानी चित्रकला के प्रमुख केन्द्र थे।

राजस्थानी लघु–चित्रों में अनेक विषय लिए गए जैसेः– राम–कृष्ण की लीलाएं, महाभारत, दुर्गाशप्तशती, भागवत पुराण, शिवपार्वती, राग–रागिनी, ऋतुएँ, नौ रस, गीत–गोविन्द, नायिका भेद, प्रेम–कथाएं (ढोला–मारू, रूपमती–बाजबहादुर, लैला–मजनू), होली, दिवाली, दशहरा, शशि जूलूस, गणगौर का जूलूस, नौका विहार, साधु–सन्त तथा बाजार–हाट इत्यादि। लघु (मिनियेचर) चित्र भोजपत्र, कागज़ लकड़ी तथा कपड़े पर बनाए जाते थे।

राजस्थानी लघु–चित्रों की विशेषता

राजस्थान की अनेक शैलियों में बने लघु–चित्रों में आकृति की बनावट, भवन, प्रकृति, रंग आदि में परिवर्तन देखने को मिलता है। यह परिवर्तन स्थानीय परम्परा, लोक–कला के अभाव, राजाओं, आश्रयदाताओं तथा चित्रकार की रूचि तथा अन्य शैलियों के प्रभाव के कारण हुआ। अधिकतर एक चश्म (साइड फेस) चेहरे बनाए गए हैं। डेढ़ तथा सवा चश्म चेहरे भी बनाए गए हैं। स्त्री–पुरूष की आकृतियाँ स्वस्थ भरी देहयष्टि, कोमल तथा भावपूर्ण हैं। स्त्रियों के विशाल नेत्र, लम्बे खुले केश या वेंणी दिखाई गयी है। रेखाऐं लयपूर्ण, अटूट तथा आवश्यकतानुसार हैं और हल्के तथा चटकीले रंगों का प्रयोग किया गया है। पुरूषों को पगड़ी, पटका, साफा, टोपी, धोती, जामा, अंगरखा, पायजामा तथा स्त्रियों को लंहगा, छोटी या पूरे बाँह का ब्लाउज (चोली), दुपट्टा या पारदर्शक ओढ़नी पहने हुए बनाया गया है। आभूषण का प्रयोग स्त्री–पुरूष दोनों के द्वारा हुआ है। किलों, भवनों, खिड़कियों, झरोखों, बालकनियों आदि की बनावट राजस्थानी वास्तु–कला के अनुसार है। किन्तु कहीं–कहीं मुगल भवनों का प्रभाव भी है। हाशिये सादे, बेलबूटों से युक्त या सुनहरे हैं। प्रकृति–चित्रण में साफ आसमान, काले घुमड़ते बादल, पशु–पक्षी, जलाशय, पुष्प, लताओं को दिखाकर स्वाभाविकता प्रदान की गई है।

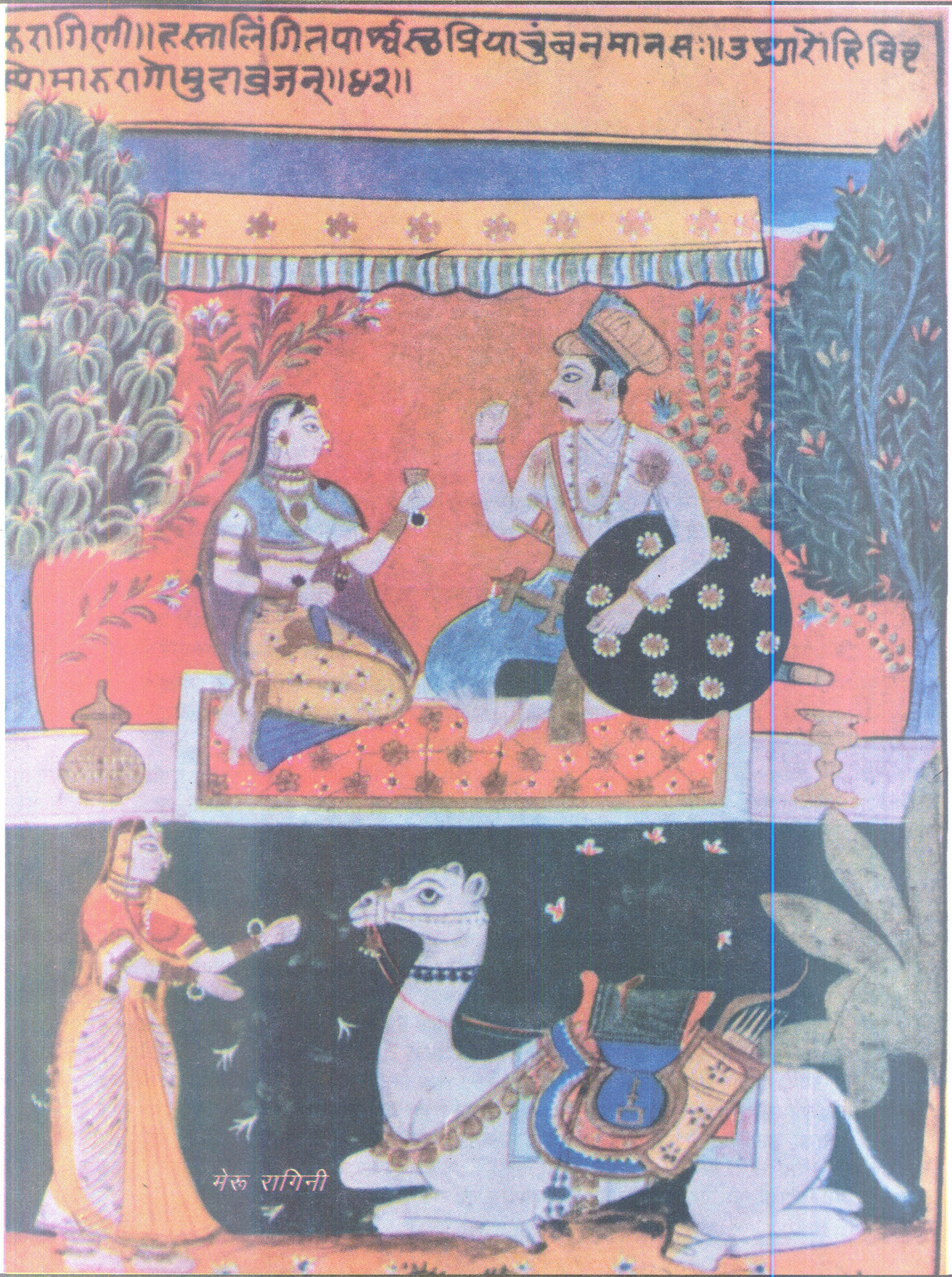

मेरू रागिनी

8.1 उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने पर आप

1. राजस्थानी चित्रकला शैली (राजस्थानी स्कूल ऑफ पेंटिग) तथा लघुचित्रों (मिनियेचर पेंटिंग) की पृष्ठभूमि, क्षेत्र, काल, मध्यकालीन धार्मिक आन्दोलन, सन्तों और कवियों की रचनाओं का चित्रकला पर प्रभाव आदि का वर्णन कर सकेंगे;
2. दिए गए लघु–चित्रों के विषय में बता सकेंगे;
3. राजस्थानी लघु चित्रों तथा पहाड़ी शैली के ज्ञान के आधार पर दिए गए लघु–चित्रों के अन्तर को स्पष्ट कर सकेंगे;
4. राजस्थानी लघु–चित्रों के चारित्रिक गुणों, विषय–वस्तु, निर्माण–विधि, रंग–योजना, प्रकृति–चित्रण आदि के आधार पर इस शैली की विशेषता का वर्णन कर सकेंगे;
5. दिए गए लघु–चित्रों की शैली, स्थान तथा सामग्री का उल्लेख कर सकेंगे;
6. दिए गए लघु–चित्रों को बनाने वाले चित्रकारों के नाम बता सकेंगे।

8.2 मेरू रागिनी (मेवाड़–उदयपुर शैली)

शीर्षक	–	*मेरू रागिनी (श्री राग की रागिनी–लघु चित्र)*	*आकार*	–	*लगभग 6"x8"*
चित्रण–काल	–	*लगभग 1650 ई.*	*विषय–वस्तु*	–	*ढोला मारू की कथा।*
सामग्री	–	*हाथ से बना कागज़, जल–रंग, ब्रश*	*चित्रकार*	–	*साहिबदीन*
माध्यम	–	*टेम्परा*	*संग्रह*	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।*

सामान्य परिचय

"ढोला मारू रा दुहा" (ढोला मारू की प्रेम–कथा) राजस्थान में बहुत प्रचलित है। राजस्थानी चित्रकला की अनेक शैलियों में इस कथा पर बहुत से भित्ति एवं लघु–चित्र प्राप्त होते हैं।

प्रस्तुत चित्र इस प्रेम–कथा पर बनाए गए चित्रों में से एक लघु–चित्र है। चित्र को दो भागों में विभाजित किया गया है। ऊपर एक तम्बू के नीचे ढोला तथा मारू को लाल कालीन पर बैठे हुए दिखाया गया है। दोनों आमने सामने है। पीछे लगे कनात का रंग लाल है। ऊपर का ढका हुआ भाग पीला तथा नीली रेखाओं से बनाया गया हैं। दोनों ओर दो हरे भरे वृक्ष हैं। ढोला को अँगरखा, पायजामा तथा पगड़ी (जिसमें कलंगी लगी हुई है) पहने हुए दिखाया गया है। ढोला तलवार, ढाल तथा कटार लिए हुए है। जमीन पर बांयी ओर सुरा (मदिरा) पात्र तथा दायीं ओर पीकदान, जिनका रंग सुनहरा है, रखे हुए हैं। मारू आसमानी रंग की चोली, पीले रंग के लँहगे तथा बैंगनी (सुनहरे किनारे वाली) रंग की ओढ़नी पहने हुए है।

चित्र के निचले भाग में मारू को ऊँट को प्यार करने या उससे कुछ कहने की मुद्रा में खड़ी दिखाया गया है। पृष्ठभूमि में गाढ़ा हरा घास का मैदान है। ऊँट बैठा हुआ है जिसका रंग सफेद है। दाहिनी ओर एक केले का छोटा वृक्ष है। पीछे मैदान में कहीं–कहीं सफेद--लाल फूल खिले हुए हैं। आगे की भूमि मटमैली, घास और फूल से युक्त है।

पाठगत प्रश्न (8.2)

1. नीचे लिखे प्रदेशों में जो सही प्रदेश हो उस पर सही (√) का निशान लगाइए
   ढोला मारू की कथा किस प्रदेश में प्रचलित है – **बंगाल, पंजाब, बिहार, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा।**
2. इस चित्र का चित्रण–काल है – **संवत् 1880, संवत् 1710 सन्, 1650 ई.,**
3. नीचे लिखे वाक्यों में से जो वाक्य ठीक हो, उस पर सही (√) का निशान लगाइए
   क. ढोला मारू के इस चित्र को तीन भागों में बाँटा गया है।
   ख. ढोला मारू के इस चित्र को दो भागों में बाँटा गया है।
   ग. ढोला को कुरता, धोती तथा खाली सिर दिखाया गया है।

राधा और कृष्ण एक दूसरे को पान देते हुए

8.3 राधा और कृष्ण एक दूसरे को पान देते हुए (किशनगढ़ शैली)

शीर्षक	–	*राधा और कृष्ण एक दूसरे को पान देते हुए।*
चित्रण–काल	–	*सन् 1735–50 के मध्य*
माध्यम	–	*टेम्परा*
सामग्री	–	*हाथ से बना कागज़ जल रंग, ब्रश*
आकार	–	*42x25 से॰मी॰*
विषय–वस्तु	–	*पान–गोष्ठी (पान–महफिल)*
चित्रकार	–	*निहालचन्द*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।*

सामान्य परिचय

इस चित्र में राधा और कृष्ण को एक–दूसरे को पान अर्पित करते (खिलाते) हुए दिखाया गया है। राधा कृष्ण एक चौकोर पलंग पर बैठे हुए हैं। पलंग पर सफेद चादर बिछी हुई है। पलंग के पास एक दासी बैठी हुई है जिसके हाथ में भी पान हैं। उसके पास एक पानदान रखा हुआ है। बाँयीं ओर चार तथा दाहिनी ओर दो दासियाँ खड़ी हैं। इन्हें हम गोपियाँ भी कह सकते हैं। नीचे घड़े तथा कुछ बर्तन रखे हुए हैं। सामने एक दासी अधलेटी मुद्रा में है। एक व्यक्ति बाँसुरी बजा रहा है तथा दूसरा व्यक्ति एक पतली छड़ी लिए हुए बैठा है। इसकी वेशभूषा गाय चराने वाले चरवाहे की तरह है। इन्हें हम गोप कह सकते हैं। चरवाहे के निकट एक व्यक्ति हाथ जोड़े खड़ा है। चित्र को काल्पनिक भाव दिया गया है। कृष्ण का रंग साँवला तथा राधा को गोरी बनाया गया है। किशनगढ़ की परम्परागत शैली में मुख, आँख, नाक, देह तथा वेशभूषा दिखाई गई है। राधा के केश लम्बे तथा खुले हुए हैं। कृष्ण के सिर पर राजशाही पगड़ी है। माला का रंग सफेद है। राधा का सिर ओढ़नी से ढँका हुआ है। सभी स्त्रियों को चोली–लंहगा और ओढ़नी (दुपट्टे) में दिखाया गया है। किशनगढ़ के चित्रकार निहालचन्द की यह एक अनुपम कलाकृति है। पृष्ठभूमि में आसमान, सफेद रंग के भवन, मीनार तथा नगर की चारदीवारी दिखाई गयी है। पीछे घना जंगल है। बीच में बड़ा–सा जलाशय (झील) है, जिसमें कमल खिले हुए हैं। जलाशय के एक किनारे पर लाल रंग की एक लम्बी–सी नाव जाती हुई दिखाई गई है। आगे की भूमि ऊँची–नीची तथा फूल–पौधों से भरी हुई है। चित्र में लगभग सभी रंगों का प्रयोग हुआ है। प्रकृति चित्रण बहुत सुन्दर है जो किशनगढ़ के लघु चित्रों की विशेषता है।

पाठगत प्रश्न (8.3)

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–
   (क) प्रस्तुत चित्र ..... शैली में बनाया गया है।
   (ख) प्रधान चित्र विख्यात चित्रकार ..... द्वारा बनाया गया हैं
   (ग) चित्र का विषय ..... है।

चित्रकूट में राम–भरत

8.4 चित्रकूट में राम–भरत (जयपुर राजस्थानी शैली)

शीर्षक	–	*चित्रकूट में राम–भरत मिलाप (रामायण का एक प्रसंग)*
समय	–	*सन् 1740 ई.*
माध्यम	–	*टेम्परा*
सामग्री	–	*हाथ से बना कागज़, जल–रंग, ब्रश*
चित्रकार	–	*गुमान*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।*

सामान्य परिचय

चित्रकूट में कुटी के सामने राम और भरत के मिलन का मार्मिक दृश्य। कुटी के पीछे ऊँचा – सा पहाड़ और हरे–भरे–घने वृक्ष। केले के कुछ छोटे वृक्ष। सामने बाँयी ओर घने वृक्षों की कतार। कुटी के सामने बड़ा–सा मैदान जहां राम और भरत गले मिल रहे हैं। मैदान में चारों ओर स्त्री–पुरूष (आश्रमवासी) तथा ऋषि–मुनि। उल्लासपूर्ण वातावरण। सामने जलाशय में कमल–पुष्प–पत्ते। मैदान का रंग मटमैला। राम सांवले तथा भरत गोरे। दोनों धोती पहने हुए। ऋषि–मुनि लाल रंग की धोती पहने हुए। स्त्रियाँ स्वच्छ और श्वेत साड़ी में दिखाई गई हैं जो सौम्यता और पवित्रता का प्रतीक है। प्रकृति चित्रण सुन्दर है। वृक्षों का रंग गहरा हरा दिखाया गया है। चित्र भावपूर्ण है। यह चित्र रामायण की कथा पर आधारित है।

पाठगत प्रश्न (8.4)

निम्नलिखित में से जो सही हो, उस पर सही (√) का निशान लगाइए–

1. प्रस्तुत चित्र का निर्माण–काल है–
   - क. 1710 ई0,
   - ख. 1725 ई.,
   - ग. 1640 ई.
   - घ. 1740 ई.
2. प्रस्तुत चित्र का माध्यम है।
   - क. टेम्परा,
   - ख. वाश तकनीक,
   - ग. तैल रंग
3. प्रस्तुत चित्र के चित्रकार का नाम है–
   - क. उत्कल राम,
   - ख. साहिबदीन,
   - ग. निहालचन्द,
   - घ. गुमान।

बणी–ठणी – किशनगढ़ शैली

8.5 बणी–ठणी (किशनगढ़ शैली)

शीर्षक	–	*बणी–ठणी (बनी–ठनी)(लघु व्यक्ति–चित्र)।*
चित्रणकाल	–	*लगभग सन् 1750 ई.*
माध्यम	–	*टेम्परा*
सामग्री	–	*हाथ से बना कागज़, जल–रंग, ब्रश*
आकार	–	*19 से.मी. x 25 से.मी.*
विषय–वस्तु	–	*राधा की सुंदरता के प्रतीक रूप में सुन्दरी बणी–ठणी का चित्र*
चित्रकार	–	*निहालचन्द*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।*

सामान्य परिचय

किशनगढ़ (राजस्थान) की अनेक सुन्दर कलाकृतियों में उपर्युक्त चित्र 'बणी–ठणी' अपना एक विशिष्ट महत्व रखती है। यहाँ के चित्रों में पुरूष और स्त्रियों की आकृतियाँ राजस्थान की सभी शैलियों से अलग हैं। इस शैली के चित्रों में दोनों की आकृतियाँ लम्बी, छरहरी, अति सुन्दर, एक चश्म (साइड फेस) चेहरे, उन्नत ललाट, लम्बी नासिका, मधुर मुस्कान, कानों तक खिंची हुई लम्बी आँखें (इसकी आकृति खंजन पक्षी से ली गई है। ऐसी आँखों को 'खंजन–नयन' कहते हैं), पतले अधर, लम्बी बाहों, आधी बाँह का ब्लाऊज़ (चोली) के साथ दिखाई गई है। झीलों, पहाड़ों तथा प्राकृतिक सौंदर्य, केले के वृक्ष, पशु–पक्षी, संगरमरमर के सुन्दर भवन, लम्बी नाव और फौबारों, जलाशयों का अंकन किया गया है।

किशनगढ़ के राजा सावन्त सिंह (शासन काल–सन् 1718–1764 ई0) राधा–कृष्ण के उपासक तथा श्रृंगारी कवि थे। निहालचन्द चित्रकार ने बणी–ठणी के इस लघु–चित्र में उसे अति सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है। किशनगढ़ में बणी–ठणी के इस अप्रतिम सौंदर्य को राधा का प्रतीक मान कर राधा–कृष्ण के चित्रों की रचना हुई। इनके बांये हाथ में डंठल में लगी कमल की दो कलियाँ हैं और दाहिने हाथ की दो अँगुलियों से वह अपनी चुन्नी (ओढ़नी) को थामे हुए घूँघट कर रही है। पृष्ठभूमि गहरे हरे रंग में सपाट तथा चित्र में सभी रंगों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है। बणी–ठणी की इस मुस्कान की तुलना **लियोनार्दो दा विन्सी** के प्रसिद्ध चित्र *'मोनालिसा'* से की जाती है।

पाठगत प्रश्न (8.5)

निम्नलिखित में से जो ठीक हो, उस पर सही (√) का निशान लगाइए–

(1) प्रस्तुत चित्र 'बणी–ठणी' का चित्रण–काल है–

(क) सन् 1700ई. (ख) सन् 1690 ई., (ग) सन् 1750 ई., (घ) सन् 1780 ई.

(2) बणी–ठणी चित्र के चित्रकार का नाम है–

(क) गुमान, (ख) साहिबदीन, (ग) निहालचन्द।

(3) प्रस्तुत चित्रों को निम्नलिखित शैली में बनाया गया है–

(क) कोटा शैली, (ख) जयपुर शैली, (ग) किशनगढ़ शैली, (घ) बूँदी शैली।

8.6 सारांश

प्राचीन समय में राजस्थान प्रदेश को राजवाड़ा, रायथान, राजपूताना तथा फिर राजस्थान नामों से सम्बोधित किया गया। राजस्थानी चित्रकला का इतिहास 16वीं से 19वीं शताब्दी तक फैला हुआ है। राजस्थानी लघु–चित्रों का विकास जैन पुस्तक शैली से हुआ। इसका क्षेत्र राजस्थान, बुन्देलखण्ड, पंजाब तथा गढ़वाल था। राजस्थानी शैली की मुख्य चार शाखाएँ थीं। राजस्थानी शैली में हजारों भित्ति तथा लघु चित्र बनाए गए। ये चित्र धार्मिक, साहित्यिक, श्रृंगारिक ग्रंथों, दैनिक जीवन, राग–रागिनियों तथा प्रेम–कथाओं आदि पर बनाए गए। इन चित्रों में खनिज तथा वानस्पतिक रंगों का प्रयोग किया गया है। अनुपात तथा सौंदर्य के प्रतिमान (मानदण्ड) प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रंथों के अनुसार हैं।

8.7 माडल प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षिप्त विवरण दीजिए–

1. राजस्थानी लघु–चित्र किन–किन विषयों पर बनाए गए?
2. राजस्थानी चित्रशैली के विभिन्न केन्द्रों के नाम लिखिए।
3. 'ढोला मारू रा दुहा' प्रेम कथा और उस पर आधारित लघु–चित्र 'मेरू रागिनी' का विवरण दीजिए।
4. 'बणी–ठणी' चित्र की विशेषता पर प्रकाश डालिए।

8.8 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.2	(क) राजस्थान	(ख) 1650 ई.	(ग) दो भागों में बाँटा गया है।
8.3	(क) किशनगढ़ शैली	(ख) निहालचंद	(ग) पान–महफिल
8.4	(क) 1740 ई.,	(ख) जयपुर,	(ग) गुमान
8.5	(क) 1750 ई.,	(ख) निहालचंद,	(ग) किशनगढ़

8.9 शब्दकोश

1. म्यूरल – दीवार पर एक विशेष प्रकार का पलस्तर लगाने के बाद सूखी सतह पर जल रंगों से बने चित्र।
2. मिनियेचर पेंटिंग – कागज़, लकड़ी, सिल्क, भोजपत्र आदि पर बनाए गए छोटे चित्र।
3. रंग–योना – चित्र में किन रंगों का या रंगों के मिश्रण को कहाँ प्रयोग किया जाय, इसकी व्यवस्था।
4. टेम्परा – सूखी सतह पर जल रंगों से चित्रण–विधि।
5. गणौर – गुजरात तथा राजस्थान में स्त्रियाँ तीन सौभाग्य का पर्व मनाती हैं। इस अवसर पर गणगौर (सौभाग्य देवी पार्वती) की प्रतिमा के साथ भव्य जुलूस भी निकाला जाता है। गणगौर जूलूस पर राजस्थानी शैलियों में बहुत से चित्र बनाए गए।
6. खनिज रंग – सोना, चांदी, अबरक, तांबा, कोयला, मोती, काजल, गेरू, खड़िया आदि से तैयार किए गए रंग।
7. वानस्पतिक रंग – फूल–पत्ती, वृक्ष की छाल, कीट पतंग आदि से तैयार किए गए रंग।
8. अनुचर – नौकर–चाकर।
9. आश्रमवासी – आश्रम में निवास करने वाले लोग।
10. पतनोन्मुख – पतन (ह्रास) की ओर जाता हुआ।
11. प्रतिमान – (मानदण्ड) किसी विशेष कार्य के लिए निर्धारित किए गए नियम।

8.10 क्रिया तथा योग्यता विस्तार–

राज्य एवं राष्ट्रीय संग्रहालयों में संग्रहीत राजस्थानी लघु–चित्रों का अवलोकन करें और शैलीगत विशेषताओं को पहचानें।